No. of Printed Pages : 8

एम.टी.टी.-002

00505

POST GRADUATE CERTIFICATE IN BENGALI - HINDI TRANSLATION PROGRAMME (PGCBHT)

सत्रांत परीक्षा

दिसंबर, 2011

एम.टी.टी.-002 : बांग्ला-हिन्दी अनुवाद : तुलना और पुनर्सृजन

समय : 3 घंटा *अधिकतम अंक : 100*

***नोट : सभी** प्रश्नों के उत्तर देने हैं।*

1. **किन्हीं दो** प्रश्नों का उत्तर लगभग 300 शब्दों में दीजिए। **10x2=20**
   (a) बाङ्ला शब्दों की उच्चारण व्यवस्था और हिंदी में लिप्यांतरण संबंधी समस्याओं पर प्रकाश डालिए।
   (b) हिन्दी और बांग्ला की शब्द संरचना और इनकी सम और विषम स्थितियों पर विचार कीजिए।
   (c) बांग्ला और हिंदी साहित्य के भक्ति आंदोलन के बारे में बताइये।

2. निम्नलिखित बांग्ला शब्दों के हिंदी पर्याय लिखिए। 5
   ছেলে, কখন, বই, তিনি, ততটা, কুমীর, শুধু, উনুন, ইতিমধ্যে, বিগ্রহ।

3. निम्नलिखित हिंदी शब्दों का बांग्ला पर्याय लिखिए। 5
   सचमुच, मुसीबत, सरहद, बहुत, बिलकुल, समझ, लड़की, पीला, सर्द, सामने।

4. निम्नलिखित कहावतों-मुहावरों में से ***किन्हीं पाँच*** का हिन्दी अनुवाद करते हुए उनका वाक्यों में प्रयोग करें। **10**

বাঁধন ভাঙা

সাত খুন মাফ

বুক জ্বলে যাওয়া

তিল তিল করে

কত ধানে কত চাল

চোখ রাঙানো

অন্ধ আবেগ

ইচ্ছে থাকলে উপায় হয়

এক হাতে তালি বাজানো

মোমের পুতুল

5. निम्नलिखित अंशों में से **किन्हीं तीन** का हिंदी में अनुवाद कीजिए। **15x3=45**

(a) বর্তমানে যে বৌদ্ধ মন্দিরটি দেখা যায়, তা নির্মিত হয়েছিল ১৯২০ সালে, দ্বিতীয় বিশ্বযুদ্ধে তা ধ্বংস হয়ে যায়। ১৯৫৮ সালে আবার তা নির্মাণ করা হয়। মন্দির সংলগ্ন জমিতে ১,০০,০০০ প্রকারের গাছ আছে। জাপানে যত রকমের গাছ আছে তার সব কিছুর নমুনা পাওয়া যাবে এখানে। সাজানো গোছানো সুন্দর নির্জন পরিবেশ। টোকিও শহরের বুকে যে এমন একটা জায়গা থাকতে পারে, তা ভাবনারও অতীত।

আজকের জাপান প্রকৃতিকে বশ করেছে বিজ্ঞানের সাহায্যে। বিজ্ঞানের ধ্বংসকারী শক্তি তাঁরা নির্মমভাবে প্রত্যক্ষ করেছে। হিরোসিমা ও নাগাসাকির ধ্বংসলীলা হয়তো তাঁদের বুঝাতে পেরেছে যে, বিজ্ঞানকে ধ্বংসের কাজে নয়, সৃষ্টির কাজে ব্যবহার করতে হবে। এ

ব্যাপারে তাঁদের সাফল্য বিস্ময়কর। দোকানের দরজায় পা রাখতেই খুলে যায় দরজা। ভেতরে গেলেই বন্ধ। কলের নলের নিচে হাত পাতলেই জল পড়তে থাকে। হাত সরিয়ে নিলেই বন্ধ। জিনিস কিনে দোকানির সামনে যেতেই একটা মেশিন নিয়ে দাম লেখা লেবেলে ছুঁয়ে দিল। কমপিউটার বাড়তি পয়সা মুহূর্তে ফেরত্ দিচ্ছে। লিফ্ট ঠিক মতো চলছে কিনা, কোথাও কোনও যান্ত্রিক গোলযোগ হচ্ছে কিনা - সব বলে দিচ্ছে কমপিউটার।

(b) বহুত কসরত করে বিশাল এক মোটা মানুষ গাড়ি থেকে প্রথমে নেমে এলেন। ভারমুক্ত হয়ে গাড়ি প্রায় এক হাত ওপর দিকে উঠে পড়ল। ঘোড়াটা ভোঁস করে একটা নিঃশ্বাস ছেড়ে একটু যেন সুস্থ হল। গাড়ি থেকে অন্যান্য সকলে নেমে পড়লেন। ক্যামেরা থাকলে বিনয় একটা ছবি তুলে রাখত। পর্বতের পাশে যেন তিন টুকরো টিলা। একজনকে ছাড়া বিনয় আর কাউকেই চেনে না। যাকে চেনে তার নাম হিমাংশু আচার্য। হিমাংশুর যোগাযোগেই এই দেখাশোনা। না চিনলেও স্বাস্থ্যবান ভদ্রলোকের হাবভাব দেখে বুঝতে অসুবিধে হয় না, তিনিই পুত্রের পিতা। জেলা শহরে আসামী ঠেঙানো মানুষ। অবসর নিলেও সারা দুনিয়াটাকে এখনো যেন এজলাস থেকেই দেখছেন। যে মহিলাকে এরই মধ্যে বার দুয়েক ধমকধামক লাগানো হয়ে গেল, তিনি নিশ্চয়ই 'স্ত্রী। স্ত্রী ছাড়া আর কার সঙ্গে অমন ব্যবহার করা যায়।

হিমাংশু হাসতে হাসতে বললে, 'কত্তা ঘোড়ায় চেপে তেল বাঁচাচ্ছেন।'

(c) রাত্রে গ্রেট ম্যাজেস্টিক সার্কাসে সুলতানের সঙ্গে কারাণ্ডিকারের আশ্চর্য খেলা দেখে বেরোবার আগে আমরা বীরেনবাবুকে থ্যাঙ্ক ইউ আর গুড বাই জানাতে তাঁর তাঁবুতে গেলাম। আইডিয়াটা লালমোহনবাবুর, আর কারণটা বুঝতে পারলাম তাঁর কথায়।

'আপনার নামটার মধ্যে একটা আশ্চর্য কাণ্ডকারখানা রয়েছে,' বললেন জটায়ু, 'ডু ইউ মাইণ্ড যদি আমি নামটা আমার সামনের উপন্যাসে ব্যবহার করি ? সার্কাস নিয়েই গপ্প, রিং-মাস্টার একটা প্রধান চরিত্র।'

বীরেন্দ্রবাবু হেসে বললেন, 'নামটা ত আমার নিজের নয়! আপনি স্বচ্ছন্দে ব্যবহার করতে পারেন।'

ধন্যবাদ জানিয়ে বাইরে বেরিয়ে আসার পর ফেলুদা বলল, 'তাহলে ইনজেকশন বাদ ?'

'বাদ কেন মশাই ? ইনজেকশন দিচ্ছে বাঘকে। ভিলেন হচ্ছে সেকেণ্ড ট্রেনার। বাঘকে নিস্তেজ করে কারাণ্ডিকারকে ডাউন করবে দর্শকদের সামনে।'

'আর ট্র্যাপীজ ?'

'ট্র্যাপীজ ইজ নাথিং,' অবজ্ঞা আর বিরক্তি মেশানো সুরে বললেন লালমোহন গাঙ্গুলী।

(d) ১৯৭৪ -এ সত্যজিৎ একটি অনবদ্য তথ্যচিত্র করলেন - 'দ্য ইনার আই'। শান্তিনিকেতনে গিয়ে নন্দলাল এবং বিনোদবিহারী মুখোপাধ্যায় দু'জনের কাছেই তাঁর শিক্ষাগত প্রাপ্তি ছিল অপরিসীম। কৃতজ্ঞতা এঁদের দু'জনের কাছেই। তবু মনে হয় বিনোদবিহারী তাঁর অন্তর্জগৎ-এ বেশি হানা দিয়েছিলেন। তিনি তাঁকে নিয়ে আশ্চর্য একটি লেখা

লেখেন - 'বিনোদদা' এই শিরোনামে। আর তাঁকে নিয়ে ছবি করেছেন 'দ্য ইনার আই'।

বিনোদবিহারী ক্ষীণদৃষ্টি নিয়েই জন্মগ্রহণ করেছিলেন। মাত্র ৫৪ বছর বয়সে সেই ক্ষীণদৃষ্টিও হারিয়ে ফেলেন তিনি। তিনি লিখেছিলেন, 'প্রত্যেক মানুষের সঙ্গে কতকগুলো ছায়া ঘুরে বেড়ায়... আমি জন্মেছিলাম সামনে, লম্বা অনিশ্চিতের ছায়া।' শিল্প জগতে বিনোদবিহারীর একাকিত্বের চেহারাটাই পরিষ্কার হয়ে যায়। শিল্পসৃষ্টির চরম সময়ে তিনি সম্পূর্ণ অন্ধ হয়ে গেলেন। অন্ধত্ব তাঁকে স্তব্ধ করেনি। কে.জি.সুব্রহ্মণ্যম বলেন, 'তিনি এই অবস্থাকে গ্রহণ করেছিলেন যেন এক ঘর থেকে অন্য ঘরে যাওয়ার পথ হিসেবে।' আর বিনোদবিহারী বলেন, আলোর জগৎ থেকে অন্ধকার জগতে প্রবেশ করে আমার শিল্পী-জীবনের এক নতুন অধ্যায় শুরু হয়েছে। দৃষ্টিহীন অবস্থাতেও স্পর্শ করে অনুভব করে ছবি এঁকেছেন তিনি। তাঁর ছিল অন্তর্দৃষ্টি - যে দৃষ্টি দিয়ে ছবি আঁকতেন বিনোদবিহারী। আর সত্যজিতের ছিল অন্য ধরণের অন্তর্জগৎ, যা দিয়ে তিনি সেলুলয়েডে তুলে ধরলেন 'দ্য ইনার আই'। এভাবেই হয়ত শান্তিনিকেতনের ঋণ কিছুটা স্বীকার করলেন তিনি।

(e) ছেলে বিশ্বাস করিল না, বলিল, না, ক্ষিদে নেই বৈ কি! কৈ, দেখি তো হাঁড়ি ?

এই ছলনায় বহুদিন কাঙালীর মা কাঙালীকে ফাঁকি দিয়া আসিয়াছে। সে হাঁড়ি দেখিয়া তবে ছাড়িল। তাহাতে

আর একজনের মত ভাত ছিল। তখন সে প্রসন্নমুখে মায়ের কোলে গিয়া বসিল। এই বসয়ের ছেলে সচরাচর এরূপ করে না, কিন্তু শিশুকাল হইতে বহুকাল যাবৎ সে রুগ্ন ছিল বলিয়া মায়ের ক্রোড় ছাড়িয়া সঙ্গীসাথীদের সহিত মিশিবার সুয়োগ পায় নাই। এইখানে বসিয়াই তাহাকে খেলাধূলার সাধ মিটাইতে হইয়াছে। একহাতে গলা জড়াইয়া, মুখের উপর মুখ রাখিয়াই কাঙালী চকিত হইয়া কহিল, মা তোর গা যে গরম, কেন তুই অমন রোদে দাঁড়িয়ে মড়া-পোড়ানো দেখতে গেলি ? কেন আবার নেয়ে এলি ? মড়া পোড়ানো কি তুই -

মা শশব্যস্তে ছেলের মুখে হাত চাপা দিয়া কহিল, ছি বাবা, মড়া-পোড়ানো বলতে নেই, পাপ হয়। সতী-লক্ষ্মী মা ঠাকুরণ রথে করে সগ্যে গেলেন।

ছেলে সন্দেহ করিয়া কহিল, তোর এক কথা মা। রথে চড়ে কেউ নাকি আবার সগ্যে যায়।

6. निम्नलिखित में से ***किन्हीं एक*** का बांग्ला में अनुवाद कीजिए। 15

(a) परन्तु आज तक सर्वाधिक विमर्श जिस हिंदी लेखक की रचनाओं का हुआ है, वे हैं प्रेमचंद। बांग्ला पाठकों में वे उसी प्रकार समादृत हुए हैं, जिस प्रकार बांग्ला के उनके समसामयिक अन्य लेखक विशेषकर शरतचन्द्र। प्रेमचंद स्वयं भी बांग्ला साहित्य के अनुरागी पाठक थे। किशोरावस्था में ही वे बंकिमचंद्र के उपन्यासों के उर्दू अनुवादों का पाठ कर चुके थे। बंगाल के तत्कालीन और संभवत: आज भी सर्वाधिक लोकप्रिय उपन्यासकार

शरतचंद्र से सबसे ज्यादा तुलना प्रेमचंद की ही की जाती रही है। दोनों कथाकारों की लेखन-शैली एवं विचारधारा में कई समानताएँ थीं, जिसके कारण बांग्ला के पाठकों में वे समान रूप से चंदनीय हैं। दोनों कथाकारों की रचनाएँ रक्त-मांस से बने हुए, दोष और गुणों से भरे हुए, अत्यंत साधारण, तुच्छ मानव की आशा-निराशा, व्यथा-वेदना, सपने देखने और उन सपनों के टूटने की कथाएँ हैं। इसीलिए शरतचन्द्र के साथ-साथ प्रेमचंद का बांग्ला में अनूदित साहित्य भी बांग्ला भाषी समाज की अत्यंत प्रिय धरोहर बन गया। प्रेमचंद की शायद ही ऐसी कोई रचना हो जिसका अनुवाद बांग्ला में न हुआ हो।

(b) पश्चिम बंगाल नामक प्रदेश भारत के पूर्वी भाग में स्थित है। इसकी सीमाएँ भारत में बिहार, झारखंड, उड़ीसा, असम और सिक्किम राज्यों तथा विदेशों-नेपाल, भूटान और बांग्लादेश-से मिलती हैं। यह एकमात्र प्रदेश है जो सागर और हिमालय की तराई दोनों से जुड़ा है। उसका दीघा नामक इलाका बंगाल की खाड़ी से लगा है और दार्जिलिंग हिमालय पर्वत श्रृंखला से। यहाँ के लोग बांग्ला भाषा बोलते हैं। बंगाल के लोगों को बंगाली कहा जाता है। यह पूर्वी भारत का प्रमुख राज्य है।

बंगाल एक उर्वर राज्य है। पश्चिम बंगाल की राजधानी कोलकाता है। यह एक महानगर है। कोलकाता को

भारत का सांस्कृतिक नगर भी कहा जाता है। यहाँ कई राज्यों के लोग रहते हैं। वे एक-दूसरे की भाषा बोलते-समझते हैं। एक-दूसरे के पर्व और उत्सवों में भाग लेते हैं। बंगाल के दक्षिण में बंगाल की खाड़ी है। कोलकाता एक बहुत बड़ा बंदरगाह भी है। कालीघाट, बेलुड़ मठ, गंगासागर यहाँ के प्रमुख तीर्थ स्थान हैं। रवीन्द्रनाथ ठाकुर का जन्म कोलकाता के जोड़ासाँको नामक स्थान में ही हुआ था। विश्वभारती, शान्तिनिकेतन भी बंगाल के दर्शनीय स्थानों में एक है। यहाँ हजारों की संख्या में पर्यटक आते हैं।